एम.ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य

(जुलाई 2024 और जनवरी 2025 सत्रों के लिए)

वैकल्पिक पाठ्यक्रम :

मॉड्यूल '4' : मध्यकालीन कविता

एम.एच.डी – 21 : मीरा का विशेष अध्ययन

एम.एच.डी – 22 : कबीर का विशेष अध्ययन

एम.एच.डी – 23 : मध्यकालीन कविता–1

एम.एच.डी – 24 : मध्यकालीन कविता–2

सत्रीय कार्य

जुलाई–2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2025
जनवरी–2025 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2025

एम.एच.डी.–21 : मध्ययुगीन कविता–1
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–21
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–21/टी.एम.ए./2024–25
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X3 = 30

(क) आली मोहि लागत बृन्दाबन नीको।
घर घर तुसली ठाकुर पूजा, दर्शन गोविंदजी को।।
निर्मल नीर बहत यमुना को, भोजन दूध दही को।।
रत्न–सिंहासन आप बिराजे, मुकुट धर्‌यो तुलसी को।।
कुंजन कुंजन फिरत राधिके, शब्द सुनत मुरली को।।4
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको।।

(ख) न भावै थारौ देसड़लो (जी) रूड़ो रूड़ो
हरि की भगति करै नहिं कोई, लोग बसे सब कूड़ो।।
माँग और पाटी उतार धरूंगी, ना पहिरूं कर चूड़ो।।
मीरां हठीली कहे संतन सों, बर पायो छै मैं पूरो।।

(ग) ऊँची अटरिया लाल किंवड़िया, निरगुण सेज बिछी।
पचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली।।
बाजूबंद कड़ूला सोहे, माँग सिंदूर भरी।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हां, सोभा अधिक भली।।
सेज़ सुखमणा मीरां सोवै, धन सुभ आज घरी।
तुम जावो राणा घर आपने, मेरी तेरी नाहि सरी।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए : 15X3 = 45

(क) मीरायुगीन राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का विवेचन कीजिए।
(ख) भक्ति आंदोलन की प्रमुख धाराओं पर प्रकाश डालिए।
(ग) मीरा की प्रेमभावना के विविध आयामों पर विचार कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5X5 = 25

(क) बहिणाबाई
(ख) मीरा का काव्य और लोक संगीत
(ग) मीराकालीन समाज में स्त्री की स्थिति
(घ) मीरा की भक्ति में वृंदावन का महत्व
(ड़) मीरा और कुंवर भोज

एम.एच.डी.–22 :कबीर का विशेष अध्ययन
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–22
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–22/टी.एम.ए./2024–.25
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X3 = 30

(क) अब का डरौं डर डरहि समाँनाँ,
जब थैं मोर तोर पहिचाँनाँ।।
जब लग मोर तोर करि लीन्हां, भै भै जनमि जनमि दुख दीन्हा।।
अगम निगम एक करि जाँनाँ, ते मनवाँ मन माँहि समानां।।
जग लग ऊँच नीच कर जानां, ते पसुवा भूले भ्रँम नाँनाँ।
कही कबीर मैं मेरी खोई, तबहि राँम अवर नहीं कोईं।।

(ख) जब गुण कूँ गाहक मिलैं तब गुण लाख बिकाई।
जब गुण कौं गाहक नहीं, तब कौड़ी बदले जाइ।।

(ग) कहा नर गरबसि थोरी बात।
मन दस नाज, टका दस गँठिया, टेढ़ौ टेढ़ों जात।। टेक।।
कहा लै आयौ यहु धन कोऊ कहा कोऊ लै जात।
दिवस चारि की है पतिसाही, ज्यूँ बन हरियल पात।।
राजा भयौ गाँव सौ पाये, टका लाख दस व्रात।।
रावन होत लंका को छत्रपति पल मैं गई बिहात।।
माता पिता लोक सुत बनिता, अंत न चले सँगात।
कहै कबीर राम भजि बौरे, जनम अकारथ जात।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक) लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए : 15X3 = 45

(क) कबीर की निर्गुण भक्ति के मूल उपादानों पर प्रकाश डालिए।
(ख) कबीर के काव्य में निहित 'माया' की अवधारणा का विश्लेषण कीजिए
(ग) कबीर की भाषा की विशिष्टताओं का विवेचन कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5X5 = 25

(क) कबीर के अध्ययन में आदिग्रंथ का महत्व
(ख) शून्य चक्र
(ग) इतिहास ग्रंथों में कबीर
(घ) कबीर के काव्य में लोक तत्व
(ड.) कबीर की शिष्य परंपरा

एम.एच.डी.–23 : मध्ययुगीन कविता–1
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–23
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–23/टी.एम.ए./2024–25
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X4 = 40

(क) राजा गियँ कै सुनहु निकाई। जनु कुम्हार धरि चाक फिराई।।
भोंगत नारि कचौरा लावा। पीत निरातर गहि दिखरावा।।
देव सराहँहि (तैसो) गोरी। गियँ उँचार गह लिहसि अजोरी।।
अस गियँ मनुसँहि दीख न काहू। ठास धरा जनु चलै कियाहू।।
का कहुँ असकै दयी सँवारीं। को तिह लाग दयि अँकवारी।।

(ख) जा कारण मैं दौर्‌यो फिरतो, सो अब घट में आई।
पाँचों मेरी सखी सहेली, तिनि निधि दई दिखाईं
अब मन फूलि भयो जग महियाँ, आप में उलटि समाईं।।
चलत चलत मेरो मन थाक्यो, मो पै चल्यो न जाई।
साँई सहज मिल्यो सोई सन्मुख, कह रैदास बताई।।

(ग) रुकमिनि राधा ऐसैं भेंटी।
जैसैं बहुत दिननि की बिछुरी, एक बाप की बेटी।।
एक सुझाव एक वय दोऊ, दोऊ हरि कौं प्यारी।
एक प्रान मन एक दुहुनि कौ, तन करि दीसति न्यारी।।
निज मंदिर लै गई रुकमिनी, पहुनाई बिधि ठानी।
सूरदास प्रभु तहँ पग धारे, जहँ दोऊ ठकुरानी।।

(घ) प्रान वही जु रहैं रिझि वापर रूप वही लिहिं वाहि रिझायो।
सीस वही जिन वे परसे पद, अंक वही जिन वा परसायो।।
दूध वही जु दुहायो री वाही दही सु सही जो वही ढरकायो।
और कहाँ लौं कहों रसखानि री भाव वही जु वही मनभायो।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए : 15X3 = 45

(क) सगुण काव्यधारा के प्रमुख पारिभाषिक शब्दों पर प्रकाश डालिए।
(ख) 'चंदायन' में अभिव्यक्त लोकजीवन के विविध रूपों का विवेचन कीजिए।
(ग) भक्तिकालीन प्रमुख कृष्णभक्त कवियों का परिचय दीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5X3 = 15

(क) भ्रमरगीत
(ख) रसखान के काव्य में भक्ति
(ग) रविदास के काव्य में 'जीव' का स्वरूप

एम.एच.डी.–24 : मध्ययुगीन कविता–1
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–24
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–24/टी.एम.ए./2024–25
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X4 = 40

   (क) जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय।
   प्यादे सों फरजी भयो, टेढ़ों–टेढ़ों जाय।।

   (ख) केशव ये मिथिलाधिप हैं जग में जिन कीरति–बेलि बई है।
   दान–कृपान बिधानन सों सिगरी बसुधा जिन हाथ लई है।
   अंग छ सातक आठक सों भव तीनहु लोक में सिद्धि भई है।
   वेदत्रयी अरु राजसिरी परिपूरणता शुभ योगमई है।।

   (ग) कहा करों परबस भई, लखि मुख रूप रसाल।
   बेची मैं नँदलाल ह्वै, लीनी मैं नँदलाल।।

   (घ) धार में धाय धँसीं निरधार ह्वै, जाय फँसी, उकसीं न उधेरी।
   री! अगराय गिरी गहिरी, गहि फेरे फिरीं न, घिरीं नहिं घेरी।।
   'देव', कछू अपनो वस ना, रस–लालच लाल चितै भइँ चेरी।
   बेगि ही बूड़ि गई पँखियाँ, अँखियाँ मधु की मखियाँ भइँ मेरी।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए : 15X3 = 45

   (क) हिंदी साहित्य के प्रारंभिक इतिहास ग्रंथों का परिचय दीजिए।
   (ख) रीतिकाव्य परंपरा का परिचय दीजिए।
   (ग) हिन्दी आलोचना में कवि 'देव' विषयक आलोचना का मूल्यांकन कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5X3 = 15

   (क) रसलीन
   (ख) रीतिकाल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
   (ग) 'केशवदास' के काव्य का प्रदेय